पाठ - 8
सहव (भूलचुक) का बयान

الدرس الثامن - هندي
السهو في الصلاة

सहव भूलचूक को कहते हैं। यदि नमाज़ी नमाज़ में सहव का शिकार हो जाए या उससे नमाज़ में कमी हो जाए या कमी बेशी को लेकर सन्देह उत्पन्न हो जाए तो उसके लिए सजदए सहव करना होगा।

यदि नमाज़ में किसी चीज़ का इज़ाफ़ा हो जाए जैसे क़ियाम, रूकूअ या कुऊद आदि तो ऐसी स्थिति में सलाम के बाद सहव के दो सजदे करे।

यदि नमाज़ी से गलती से कोई कमी रह गयी हो, जैसे नमाज़ के किसी रुक्न का छूट जाना, या किसी चीज़ का पढ़ने से रह जाना, और बाद वाली रकअत के क़िरात शुरु करने से पहले वह याद आया हो तो नमाज़ी उसे दोहरा लेगा और छूटा हुआ रुक्न और उसके बाद के आमाल को अंजाम देगा। इसके अलावा सजदए–सहो भी करेगा। लेकिन यदि उसके बाद वाली रकअत की क़िरात शुरु करने के बाद याद आया हो तो जिस रकअत में रुक्न छूटा हो, वह बातिल हो जायेगी और उसके बाद वाली रकअत उसकी जगह ले लेगी।

यदि छूटे हुए रुक्न का ज्ञान सलाम फेरने के बाद हुआ और समय ज़्यादा नहीं बीता हो तो एक रकअत पूरा करेगा और सजदए सहव करेगा। लेकिन यदि समय ज़्यादा हो गया हो, या वुज़ू टूट गया हो तो नमाज़ को नये सिरे से पढ़ेगा ।

यदि किसी वाजिब चीज को भूल गया हो जैसे तशह्हुद के लिए बैठना, या इसी तरह नमाज़ की कोई दूसरी वाजिब चीज़, तो ऐसी स्थिति में सलाम से पहले दो सजदए सहव करेगा,

सन्देह की स्थिति में, यदि इंसान को रकअतों की संख्या के बारे में सन्देह हो, जैसे उसे सन्देह हो जाए कि उसने दो रकअतें पढ़ी हैं या तीन रकअतें पढ़ी हैं तो इस स्थिति में कम वाली संख्या को बुनियाद बनायेगा। क्यों कि उसकी नज़र में वह संख्या यक़ीनी है। और सलाम से पहले सजदए सहव करेगा,

यदि रुक्न के छूट जाने के सिलसिले में शक हो जाए तो उसे यह मान कर अदा करेगा मानो उसने उस रुक्न को छोड़ दिया है। अतएव वह उस अमल को और उसके बाद के आमाल को अंजाम देगा और सजदए–सहव करेगा।

यदि उसे शक होने लगे कि पता नहीं मैंने यह पढ़ा है कि नहीं, या यह किया है कि नहीं तो जिस तरफ उसका अधिक गुमान हो उसी के अनुसार अमल करेगा और सजदए सहव अंजाम देगा।